डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2012 : मूल्य - पाँच रुपय

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक :छठा | अक्टूबर-2012

5 सच में सच समा जाता है
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
(हैदराबाद)

17 सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा,
सुमन आनन्द व
परमजीत सिंह

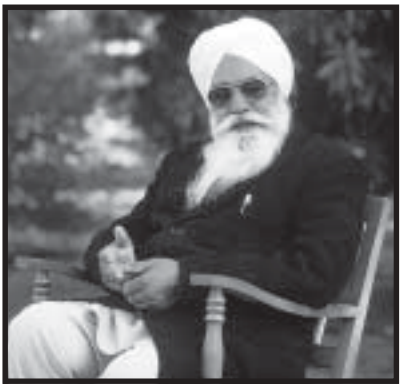

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर, सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस. वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in - 127- Website : www.ajaibbani.org

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच में सच समा जाता है

वारां - भाई गुरदास जी

हैदराबाद

पुतु जणै वड़ि कोठड़ी बाहरि जगु जाणै।
धनु धरती विचि दबीऐ मसतकि परवाणै।
वाट वटाऊ आखदे वुठै इंद्राणै।
सभु को सीसु निवाइदा चढ़िऐ चंद्राणै।
गोरख दे गलि गोदड़ी जगु नाथु वखाणै।
गुर परचै गुरु आखीऐ सचि सचु सिआणै।।

भाई गुरदास जी प्यार से समझाते हैं कि जो महान आत्माएं परमात्मा की मौज में इस संसार में आती हैं उनको परमात्मा स्वयं भेजता है। उन्हें आत्माओं को परमात्मा के पास वापिस ले जाने का कार्य करना पड़ता है। ऐसे महात्माओं ने भजन-अभ्यास किया होता है वे अपने आपको छिपाकर रखते हैं फिर भी संसार में सबको पता चल जाता है तो उन्हें एक दिन बाहर आना पड़ता है।

ऐसा देखा गया है कि ऐसे महात्मा संसार में छोटे बनकर रहते हैं और उनके बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते लेकिन जब उचित समय आता है प्रेमी उन्हें पहचान लेते हैं और उन्हें दुनियां में ले आते हैं।

सबसे पहले हम गुरु नानकदेव जी का उदाहरण लेते हैं। गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा(जो बाद में गुरु अंगद बने) से कहा, ''मेरे बेटे तुम्हें आत्माओं को परमात्मा से जोड़ने का कार्य नहीं करने देंगे इसलिए अब तुम अपने गाँव जाकर भजन-अभ्यास करो।'' गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ने से बहुत समय पहले ही गुरु

अंगद को उनके गाँव भेज दिया था। गुरु नानकदेव जी के चोला छोड़ने के बाद बाबा बुड्ढा जैसे बहुत से पहुँचे हुए शिष्य जो भाई लैहणा के बारे में जानते थे, उन्होंने आपसे संसार में 'शब्द-नाम' का कार्य करने की विनती की।

ऐसा ही गुरु अमरदेव जी के साथ हुआ। गुरु अंगददेव के बेटे दातु और दासु ने गुरु अमरदेव का विरोध किया। उन्होंने एक बार आपको पैर से मारा लेकिन गुरु अमरदेव जी ने उन पर गुस्सा नहीं किया बल्कि यह कहा, ''मेरा शरीर बूढ़ा हो गया है मेरी बूढ़ी हड्डियों से आपके पैरों को चोट लगी होगी मुझे इसका अफसोस है।'' आपमें इतनी नम्रता थी। आपने गुरु अंगददेव के धन और दौलत की ओर नहीं देखा। चुपचाप वह जगह छोड़ दी और गोईन्दवाल चले गए वहाँ जाकर गुरु का दिया हुआ कार्य जारी रखा।

जब गुरु अमरदेव का अंत समय आया उस समय रामदास आपके उत्तराधिकारी बनने वाले थे लेकिन गुरु अमरदेव के बेटों व परिवार के लोगों ने रामदास जी का बहुत विरोध किया। गुरु अमरदेव ने चोला छोड़ने से पहले अपने परिवारवालों को बुलाया और अपने बेटे मोहरी से गुरु रामदास के चरणों में मत्था टिकवाया। वे लोग गुरु अमरदेव जी के फैसले से खुश नहीं हुए और उन्होंने गुरु रामदास का विरोध किया।

सतगुरु किसी को श्राप नहीं देते लेकिन कभी-कभी जब बच्चे परेशान करते हैं तो कुछ शब्द उनके मुँह से निकल आते हैं। गुरु अमरदेव ने अपने बेटे मोहन से कहा, ''तुम्हारे शरीर में सदा जलन होती रहेगी।'' उस समय से उसके सीने में जलन की बीमारी हो गई। जब मोहन ने गुरु अर्जुनदेव जी के पास जाकर माफी माँगी तो उसे इस बीमारी से छुटकारा मिला।

उस समय गुरु अमरदेव जी ने प्यार से प्रेमियों को समझाया कि उत्तराधिकारी का कार्य सौंपना गुरु के हाथ में नहीं होता। यह परमात्मा पर निर्भर करता है, परमात्मा स्वयं इसका फैसला करता है कि उत्तराधिकारी कौन बनेगा? यह शान गुरु में परमात्मा खुद रखता है। जब उचित समय आता है गुरु अपने उत्तराधिकारी को यह कार्य सौंप देता है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''रूहानियत किसी विशेष परिवार, गद्दी, किसी स्थान या किसी ईमारत से बंधी हुई नहीं है। यह परमात्मा का ही कार्य है कि उसने किसे यह सम्मान देना है? सन्त-महात्मा परमात्मा के दरबार में पहुँचते हैं वे जानते हैं कि कौन इस काम के लायक है और किसे यह काम देना है?''

जो ताकत सतगुरु के इंसानी चोले में काम करती है वह किसी परिवार या किसी विशेष व्यक्ति से बंधी हुई नहीं होती। सतगुरु सबसे प्यार करते हैं तो भी उदासीन रहते हैं। केवल वही ताकत जानती है कि वह किसमें प्रकट होगी और किसको यह कार्य देना है। यह ताकत मालिक की मौज में काम करती है।

मिस्टर ओबेराय महाराज कृपाल सिंह जी के गाँव के ही रहने वाले थे। शुरू से ही इनका परिवार महाराज कृपाल के बहुत नज़दीक था। आप महाराज कृपाल के निजी सचिव की तरह थे। आखिरी दिनों में जब महाराज कृपाल बीमार थे उस समय मिस्टर ओबेराय ने आपसे पूछा, ''महाराज जी! आप संगत को किसके आसरे छोड़कर जा रहे हैं?'' उस समय महाराज कृपाल ने आसमान की ओर इशारा करके कहा, ''सच का कभी नाश नहीं होता सच खुद अपने आपको प्रकट कर देगा। प्रेमी अपने आप ही उस ताकत को पहचान लेंगे।''

मिस्टर ओबेराय की पत्नी और मि. कुंदन सिंह की पत्नी सगी बहने हैं। वे दोनों महाराज कृपाल के पास इस तरह रहती थी जैसे बलवंत मेरे पास रहती है। उन दोनों की शादी महाराज कृपाल ने स्वयं की थी। आप सोचकर देख सकते हैं कि जिन प्रेमियों की शादी महाराज कृपाल ने की थी वे आपके कितने नज़दीकी थे।

महाराज कृपाल कहते हैं, ''सच का कभी नाश नहीं होता। सच अपना आधार कभी नहीं खोता, यह सदा रहता है।'' इसलिए ऐसे प्रेमी भ्रमित नहीं होते वे अपने मन को संसार में भटकने नहीं देते। वे ठीक समय का इंतजार करते हैं और सच्चाई की तलाश में रहते हैं। समय आने पर उनको सच्चाई का पता चल जाता है।

तेग बहादुर सिक्खों के नौंवे गुरु बने। आपने अपना ज्यादातर समय भजन-अभ्यास करते हुए गुफा में बिताया। आप कमला तेगा कहलाते थे। आप दुनियां में बाहर नहीं आते थे और न ही आपसे लोग मिलते थे। आप सदा भजन-अभ्यास में लगे रहते थे। जब गुरु हरिकृष्ण का अंत समय आया तो सेवक हरिकृष्ण के पास आए और उनसे पूछा, ''आपके बाद हम किसे गुरु मानें, आप हमें किसके आसरे छोड़कर जा रहे हैं?'' गुरु हरिकृष्ण ने कहा, ''बाबा बकाला।'' गुरु हरिकृष्ण तेग बहादुर के दादा लगते थे।

जब गुरु हरिकृष्ण ने यह इशारा दिया तो सभी बकाला की और दौड़े जहाँ गुरु तेग बहादुर रहते थे। आपके सारे परिवार के लोग यह मौका पाना चाहते थे। उन सबने दावा किया कि वे ही सच्चे उत्तराधिकारी हैं। आखिर गुरु हरिकृष्ण के परिवार से गद्दी के बाईस दावेदार हो गए। उन सबने अपनी जगह बना ली और सब गुरु हरिकृष्ण के उत्तराधिकारी बन गए। वे सब संगत को आकर्षित करने लगे।

सतगुरु परम सन्त कोई चमत्कार नहीं करते लेकिन कभी-कभी सच्चाई को प्रकट करने के लिए थोड़ा सा रूहानियत का प्रदर्शन करते हैं। यह एक मशहूर घटना है कि मक्खनशाह लबाणा एक व्यापारी था। उसका जहाज समुद्री तूफान में फँस गया। उसने उस समय प्रार्थना की, ''अगर इस समय गुरु नानक के घर की कोई ताकत काम कर रही है तो वह मुझे इस तूफान से बचा लें। मैं गुरु के लंगर में पाँच सौ सोने की मोहर देने की प्रतिज्ञा करता हूँ।'' गुरु कभी चमत्कार नहीं दिखाते लेकिन लोगों को सच्चाई बताने के लिए उन्हें दया बरतानी पड़ती है जिसे लोग चमत्कार समझते है। वे सदा सब कुछ परमात्मा की मौज में करते हैं।

परमात्मा की दया से मक्खनशाह लबाणा का जहाज बच गया। उसने पाँच सौ मोहरे चढ़ाने की प्रतिज्ञा की थी। उसे बताया गया कि गुरु ताकत बकाला में है लेकिन जब उसने बाईस लोगों को गुरु हरिकृष्ण का उत्तराधिकारी बना देखा तो वह उलझन में पड़ गया, उसे समझ नहीं आया कि वह मोहरें किसके आगे चढ़ाए। उसने सोचा! मैं सबकी परिक्षा क्यों न लूँ? उसने पाँच-पाँच मोहरें सबको चढ़ाई आखिर में उसने वहाँ के लोगों से पूछा, ''क्या सोढ़ी परिवार से कोई और भी है जो गुरु होने का दावा करता है?'' वहाँ के लोगों ने कहा, ''एक और है जो गुरु होने का दावा तो नहीं करता लेकिन वह गुफा में बैठकर भजन-अभ्यास करता रहता है लोग उसे तेगा कमला कहते हैं।''

मक्खन शाह ने सोचा! अब इसकी भी परिक्षा लेनी चाहिए। मक्खनशाह ने तेगबहादुर के आगे पाँच मोहरें चढ़ाई। तब गुरु तेगबहादुर ने अपनी कमीज फाड़कर अपना कंधा दिखाया जिस पर जहाज को बचाने की कोशिश में निशान पड़े हुए थे। जब मक्खनशाह

ने देखा कि गुरु तेगबहादुर सच्चे हैं तो उसने छत पर जाकर झंडा लहराया और चिल्लाया, ''गुरु लादो रे! गुरु लादो रे!'' मक्खनशाह बड़ा प्रभावशाली आदमी था उसने संगत में प्रेमियों को इकट्ठा किया जिससे गुरु तेगबहादुर के लिए सतसंग करना संभव हुआ।

किसी ने गुरु तेगबहादुर के भतीजे धीरमल को विरोध करने के लिए प्रेरित किया। धीरमल ने गुरु तेगबहादुर पर गोली चलाई लेकिन आप बच गए। तब गुरु तेग बहादुर पंजाब छोड़कर आसाम चले गए। बाद में आप पंजाब आए और आपने आनन्दपुर साहब शहर बसाया। वहाँ पर आपने नामदान देने का कार्य किया। गुरु तेग बहादुर सदा छोटे बनकर रहे, आप सदा गुफा में भजन करते रहे लेकिन जब सच्चाई को बाहर आना था तब सच्चाई बाहर आई और लोगों को आपके बारे में पता चला।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सच्चाई कभी छिपी नहीं रहती। यह जरूर बाहर आती है। गुरु सच्चाई को प्रकट करने के लिए अपना ही तरीका रखते हैं। उन्हें ऐसा करना पड़ता है ताकि दुनियां को सच्चाई का पता चले।

मेरे बारे में भी आपने रसल परकिन्स की किताब में पढ़ा है कि मेरे इलाके के लोग भी मेरे बारे में नहीं जानते थे। जब ये लोग मेरे पास आए तो कोई इन्हें मेरे पास आने का रास्ता भी नहीं बताना चाहता था। आप सोच सकते हैं कि किसी दूसरे देश का आदमी आए जिसे कोई रास्ता बताने वाला भी न हो। जबकि मेरे इलाके के लोग भी मुझे भली-भाँति नहीं जानते थे।

इस बारे में भाई गुरदास सुंदर मिसालें देकर समझाते हैं कि यह इस तरह है कि माँ बंद कमरे में बच्चे को जन्म देती है तो भी सबको पता चल जाता है कि इस परिवार के यहाँ बच्चा पैदा हुआ

है। इसी तरह वर्षा या बर्फ गिरती है तो यह छिपी नहीं रहती। यात्री भी हवा के रूख से बता देते हैं कि आज वर्षा या बर्फ गिरेगी।

जिस समय भाई गुरदास ने यह बानी लिखी उस समय लोग सोने व चांदी के सिक्कों को जमीन के नीचे छिपाकर रखते थे। चाहे धन जमीन के नीचे छिपाकर रखा होता है लेकिन यह आदमी के चेहरे पर चमक दर्शाता है कि यह आदमी बहुत अमीर है।

उत्तर भारत में जब चंद्रमा निकलता है तो दूज के चंद्रमा को सब शीश झुकाते हैं। सबका पता चल जाता है कि चंद्रमा निकल आया है। भाई गुरदास जी कहते हैं, ''गोरखनाथ अपने ऊपर फटा हुआ कंबल रखते थे तो भी आप संसार के मालिक कहलाए। यह आपके भजन-अभ्यास और परमात्मा की भक्ति ही थी।''

उसी तरह से गुरु भजन-अभ्यास करके अपने गुरु का हुक्म मानकर और गुरु के स्वरूप को अंदर प्रकट करके गुरु का रूप ही बन जाता है। जो कुछ गुरु कहता है, वह वही कहता है। गुरु और उसमें कोई अंतर नहीं रहता **सच में सच समा जाता है।**

आपने सुखमनी साहब (खुशियों का खज़ाना) में पढ़ा होगा कि जो आठो पहर चौबिस घंटे प्रभु का नाम जपता है, वह छिपा नहीं रहता। कबीर साहब कहते हैं:

भक्ति करे पाताल में प्रगट होए आकास।

हउ अपराधी गुनहगार हउ बेमुख मंदा।
चोरु यारु जूआरि हउ पर घरि जोहंदा।
निंदकु दुसटु हरामखोरु ठगु देस ठगंदा।
काम क्रोधु मदु लोभु मोहु अहंकारु करंदा।

बिसासघाती अकिरतघण मै को न रखंदा।
सिमरि मुरीदा ढाढीआ सतिगुर बखसंदा।।

आखिर में भाई गुरदास जी दीनता के बारे में बताते हैं कि यह बानी किसी के प्रति ईर्ष्या या जलन के लिए नहीं लिखी गई। इस बानी को लिखने का यह मतलब नहीं है कि हमें किसी के प्रति ईर्ष्या या जलन रखनी चाहिए। हम भी इस सतसंग को किसी व्यक्ति की तरफ संकेत करके नहीं कर रहे हैं।

भाई गुरदास जी कहते हैं अगर हम किसी को कृत्धन कहते हैं किसी से ईर्ष्या करते है या दूसरों को गालियाँ देते हैं तो जब हम दूसरों की निन्दा करते हैं तो हम अपने अंदर उनकी बुराईयों को ग्रहण करते हैं। इसलिए भाई गुरदास विनम्रता से कहते हैं, ''मैं किसी की निन्दा नहीं करता। मेरे अंदर बहुत दोष हैं। मैं अपने अंदर बीस तरह की बुराईयां रखता हूँ।''

भाई गुरदास कहते हैं, ''मैं पापी हूँ। मैं भूला हुआ हूँ। मैं गुरु विरोधी हूँ। मैं गुरु का वफादार नहीं हूँ। मेरे अंदर और भी बहुत से अवगुण हैं। मैं पापी हूँ, जुआरी हूँ, दूसरों के दोष देखने वाला हूँ, निन्दक हूँ, बुरा हूँ, गुरु का नमकहरामी हूँ।'' मैं अपवित्र हूँ, क्रोधी हूँ, लालची हूँ, मोह में फँसा हुआ हूँ। मैं इस लायक भी नहीं हूँ कि लोग मुझे अपने दरवाजे के आगे खड़ा रहने दें।'' चाहे हम सबमें ऐसे अवगुण होते हैं फिर भी हम उनको स्वीकार नहीं करते।

भाई गुरदास कहते हैं कि सतगुरु माफी देने वाला है, हमारी गलतियों को बख्शता है। अपने सेवकों के सारे अवगुण माफ कर देता है। गुरु नानक कहते हैं, ''गुरु दयालु है क्षमा देने वाला है। वह अवगुणों से भरपूर लोगों में शुभ गुणों को प्रकट करता है।''

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''पूर्ण गुरु एक धोबी की तरह है। धोबी रसोईए और तेली के कपड़ों को भी स्वीकार करता है उसे अपने करतब पर मान होता है वह जानता है कि वह सबके कपड़े साफ कर सकता है।'' उसी तरह पूर्ण सतगुरु जानते हैं कि माया की दलदल के नीचे पापों के बोझ तले सबके अंदर एक पवित्र आत्मा है। सतगुरु अपनी दया से सबकी आत्माओं को पवित्र बना सकता है।

हमारे इलाके में हिन्दु धर्म को मानने वाला एक बड़ा अच्छा आदमी रहता था। वह माँस नहीं खाता था शराब नहीं पीता था अच्छी जिंदगी बिता रहा था। उसी इलाके में मेरे आश्रम से एक किलोमीटर दूर एक वेश्या रहती थी। वह रात को नहर के किनारे आकर बैठ जाती और सेवादारों को बानी गाते हुए सुना करती थी। उसने लोगों से उसे आश्रम ले जाने के लिए कहा लेकिन कोई भी उसके साथ आने को तैयार नहीं था क्योंकि वह एक वेश्या थी।

एक दिन वह अकेली मेरे पास आई और उसने कहा कि आप कहते हैं अगर दयालु सतगुरु दया करे तो अच्छे लोगों के साथ पापी भी तर जाते हैं। क्या मुझ जैसे पापी के लिए भी मुक्ति संभव है? मैंने कहा, ''हाँ! तुम्हारे लिए भी संभव है। तब उसने सतगुरु के बारे में पूछा कि वे जब आएंगे तो मैं उसे सूचना दूँगा। मैंने कहा मैं तुम्हें खुशी-खुशी सूचना दूंगा तुम यहाँ आ सकती हो।'' वह आई उसके साथ वह हिन्दु व्यक्ति भी आया। महाराज कृपाल ने वेश्या को तो नामदान की मंजूरी दे दी लेकिन हिन्दु को मंजूरी नहीं दी जबकि वह बहुत अच्छा आदमी था।

इस बात के लिए उस इलाके के लोगों ने महाराज कृपाल की बड़ी निन्दा की। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस हिन्दु आदमी में

क्या गलत बात थी और उस वेश्या को नामदान की मंजूरी क्यों दी गई? उसमें क्या अच्छी बात थी?

मैंने उन लोगों से कहा, ''समय ही बताएगा कि महाराज जी ने यह फैसला क्यों किया? चाहे लोगों ने महाराज कृपाल की निन्दा की लेकिन महाराज कृपाल ने उनकी निन्दा की परवाह नहीं की। आपने बड़ी खुशी और प्यार से वेश्या को नामदान दिया। मैंने प्रेमियों से कहा कुछ समय इंतजार करो क्या यह वेश्या बनी रहती है या बदल जाती है?''

नामदान प्राप्त करने के बाद उसने वेश्या का धंधा छोड़ दिया वह सादा जीवन बिताने लगी। उसने जो वेश्यावृति से धन कमाया हुआ था वह सारा धन दे दिया। ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाने लगी। अब वह इस संसार में नहीं है लेकिन मृत्यु तक उसने अच्छा जीवन बिताया, बुरे रास्ते पर नहीं चली।

कहने का मतलब यह है कि महाराज कृपाल ने निन्दा की परवाह नहीं की। उसके पापों को माफ कर दिया उसे गले लगाया और नामदान दिया। आप सदा कहा करते थे, ''सतगुरु पापियों के लिए आते हैं। हम पापी है हममें बहुत अवगुण हैं यह सतगुरु की दया है कि हम उनके चरणों में बैठे और इस रास्ते पर आए हैं।''

प्यारेयो! मैं अक्सर कहा करता हूँ कि जब हम भजन करते हैं तीसरे तिल पर आ जाते हैं वहाँ टिकना शुरू कर देते हैं यहाँ तक कि जो नीचे के मंडलों में जाते हैं वे भी अपने अवगुणों व बुरे कर्मों के बारे में जान जाते हैं जो उन्होंने पिछले जन्मों में किए होते हैं। जब हम ऊपर के मंडलो में जाते हैं तब हर चीज़ खुली किताब की तरह साफ हो जाती है फिर हमें पिछले जन्मों में किए बुरे कर्मों का पता चल जाता है कि हम कितने गंदे थे और हमारा सतगुरु कितना

दयालु था। यह केवल सतगुरु की दया थी कि उसने हमें पवित्र कर दिया। आप लोग सुबह गुरबानी का यह भजन गा रहे थेः

असी मैले सतगुरु जी ऊजल कर दे।
हम मैले तुम ऊजल करते, हम निर्गुण तूं दाता।
हम मूर्ख तुम चतुर सयाने तूं सर्वकला का ज्ञाता।
कहो नानक हम ऐहो हवाला राख संतन के पाछे।

कबीर साहब कहते हैंः

बुरा जो देखन मैं गया बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।।

प्यारेयो! सतगुरु हमें बुरे कर्मों से छुड़वाने के लिए आते हैं। वे हमारे लिए मिसाल होते हैं वे चाहते हैं कि हम बुरे कर्मों को छोड़ दें इसलिए वे सदा कहते हैं, ''प्यारेयो! दूसरों से ईर्ष्या मत करो दूसरों की निन्दा मत करो अगर आपने दोष देखने हैं तो अपने दोष देखें और उन्हें छोड़ने की कोशिश करें।''

सतगुरु नाम-रूप होता है। वह अपने लिए छोटे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं ताकि हमारा मन समझ जाए कि हम कितने गंदे पाप और मंद कर्मों में लगे हुए हैं लेकिन वे फिर भी कहते हैं कि हम अच्छे हैं। ऐसे महात्माओं की बानी पढ़कर हम समझ सकते हैं कि वे ऊपर उठ चुके होते हैं और अपने सच्चे घर पहुँच चुके होते हैं। ऐसे महात्मा न तो किसी की निन्दा करते हैं और न ही अपने शिष्यों को किसी की निन्दा करने की इज़ाज़त देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसकी बुराई करते हैं उसके बुरे गुण और पाप आपके खाते में आ जाते हैं और आपके अच्छे गुण उस आदमी के खाते में चले जाते हैं।''

भाई गुरदास पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे। आप सच्चखंड पहुँचे हुए थे, गुरु के चरणों तक पहुँचे हुए थे। आपने ये सारी बातें हमें समझाने के लिए लिखी हैं कि प्यारेयो! आपको नाम की कमाई करनी चाहिए। अपने आपको गुरु को अर्पित कर देना चाहिए क्योंकि गुरु ही हमें माफ कर सकता है वह इस संसार में हमें माफ करने के लिए ही आया है।

हमने इस बानी पर कई सतसंग सुने हैं हमें इससे कुछ सीखना चाहिए। हमें दूसरों के प्रति नफरत या बुरे विचार नहीं रखने चाहिए। सबसे प्यार करना चाहिए और गुरु से प्यार पैदा करना चाहिए क्योंकि सतगुरु का प्यार ही हमें इस संसार के प्यार और मोह को कम करने में मदद करता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालो के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *महाराज जी! मेरे पहले जीवन में काफी परेशानियाँ और तकलीफें रही हैं जिन्हें मैं भुला नहीं पाई। जो व्यक्ति परेशानियों का कारण बना मैं उसे क्षमा नहीं कर पाई। जो लोग उन परेशानियों का कारण बने मैं उन्हें कैसे माफ कर सकती हूँ?*

बाबाजी: सभी सन्तों ने इस दुनियां को परेशानियों का घर और परेशानियों का देश कहा है। यहाँ एक परेशानी से दूसरी परेशानी जन्म लेती है। यहाँ अन्धा अन्धे का आगु है। यह घोर अन्धेरे वाली नगरी है। उच्च कोटि के महात्मा सदा संसार में आते रहे। सब इतना प्यार इतनी दया लेकर आते रहे लेकिन इन दुनियादार लोगों ने उनके लिए भी परेशानियाँ खड़ी की।

आप बारीकी से सोचकर देखें! जिस व्यक्ति ने हमारे लिए परेशानियां खड़ी की क्या हमने कभी उसके लिए अच्छे ख्याल रखे? क्या कभी उसके साथ अच्छा व्यवहार किया? आमतौर पर देखा जाता है कि मन अपने ऊपर इल्ज़ाम नहीं लेता अपना इल्ज़ाम दूसरे पर थोपता है; हम अपनी पड़ताल नहीं करते।

प्यारेयो! सन्त संसार में दया का अंग लेकर आते हैं। प्रभु ने उन्हें दया का अंग विरासत में दिया होता है, उन्हें माफी का खज़ाना देकर संसार में भेजा जाता है।

लोगों ने महात्माओं की बहुत बुरी हालत की। क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाया। मंसूर की पत्थर मारकर मौत की गई। गुरु नानकदेव जी को कुराहिया और कमला कहा गया। गुरु अर्जुनदेव

जी को गैर मनुखी तसीहे देकर शहीद किया गया। यह सब धर्म के ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर किया लेकिन महात्मा ने फिर भी प्रभु के आगे फरियाद की, ''हे परमात्मा! तू इन्हें माफ कर दे क्योंकि ये नहीं जानते कि ये अपने लिए कितना बुरा कर्म बना रहे हैं?'' महात्मा तो जान लेने वालों को भी माफ कर देते है तो वे हमें कैसे यह सलाह दे सकते हैं कि आप बदला लें?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''यह काल की नगरी है। काल के राज्य में न्याय है, आँख के बदले आँख ली जाती है लेकिन दयाल के राज्य में माफी है। सतसंगी के लिए यही बेहतर है कि वह दया के अंग को सदा पास रखे।''

एक प्रेमी: *हम अपनी छोटी-छोटी शिकायते खुद बर्दाशत कर सकते हैं क्या ऐसा करके हम गुरु के बोझ को कम कर सकते हैं?*

बाबा जी: हाँ भाई! यह बहुत अच्छा सवाल है, गौर से समझने वाला है। आप सब इसे प्यार से समझने की कोशिश करें। पिछले सवाल-जवाब के कार्यक्रम में कई प्रेमियों ने बताया कि उनके सवालों का जवाब उन्हें सतसंग में ही मिल गया था। मैं आशा करता हूँ कि यह सवाल भी बहुत गहराई से सोचने वाला है। आप जानते हैं कि हम काल के राज्य में हैं। यहाँ माफी नहीं बदला है, जो जैसा करता है वैसा ही भरता है। जो लूले-लगंड़े या अंधे होते हैं या जिन्हें जन्म से ही बहुत रोग लगे होते हैं उन आत्माओं के ऐसे ही कर्म होते हैं जिन्हें भोगने के लिए वे फिर संसार में आते हैं और ऐसे भी जीव होते हैं जिन्होंने कई जन्मों में अच्छे कर्म किए होते हैं प्रभु उनकी किस्मत में नाम, पूरे गुरु के दर्शन लिख देता है।

मैं जब कोलंबिया में डाक्टर डूके के घर गया मुझे वहाँ ऐसी कई आत्माओं को देखने का मौका मिला जो अपने आप चल-फिर

नहीं सकती थी, अपने आप खाना भी नहीं खा सकती थी। जो आत्माएं डाक्टर डूके के संपर्क में आई उन प्रेमियों के वारिस उन्हें लेकर मेरे पास आए हालाँकि वे खुद नामलेवा नहीं थे लेकिन उनका भी कोई ऐसा कर्म था कि उनकी किस्मत में सन्तों का दर्शन लिखा था। जो महान आत्माएं सतगुरु के 'शब्द' की कमाई करती हैं वे 'शब्द-रूप' हो जाती हैं उनमें और परमात्मा में कोई भिन्न-भेद नहीं होता। गुरु नानक कहते हैंः

हर का सेवक सो हर जेहा, भेद न जानो मानस देहा।

ऐसे महात्माओं का परमात्मा के साथ इस तरह का रिश्ता होता है जैसे जल से बुलबुले उठते हैं और जल में ही समा जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जेलखाने में कैदी भी होते हैं और सुप्रीडेंट भी होता है वे दोनों ही इंसान हैं लेकिन दोनों की ड्यूटी में बहुत बड़ा अन्तर होता है। कैदी मुशक्कत भोगता है और सुप्रीडेंट आजाद होता है। इसी तरह मरीज अस्पाल में डाक्टर के पास जाता है; मरीज दुःख से भरा होता है लेकिन डॉक्टर को कोई दुःख नहीं होता जबकि दोनों ही इंसान हैं। इसी तरह पढ़े-लिखे और अनपढ़ का फर्क होता है। अनपढ़ को कोई समझ नहीं होती उसे अपने आपका ज्ञान नहीं होता, पढ़ा-लिखा अच्छी जिन्दगी व्यतीत करता है जबकि दोनों ही इन्सान हैं।''

जैसे एक जज है, जब वह बाजार में चलता-फिरता है तो हम उसकी हस्ती को नहीं समझ सकते लेकिन जिस समय वह ड्यूटी पर होता है उस समय हमें उसकी हस्ती का ज्ञान होता हैं। इसी तरह महात्मा भी संसार में इंसान की शक्ल लेकर आते हैं अगर परमात्मा अपने प्यारों को गाय-भैंस के चोले में भेजता तो हम उनकी बोली न समझ सकते अगर देवी-देवता के रूप में आता तो

हम उन्हें देख न सकते। इंसान का टीचर केवल इंसान ही हो सकता है इसलिए प्रभु हम इंसानों में इंसान बनकर आता है।

हम जीवों में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लहरें उठ रही हैं, हमारा जीवन अंदर से अशान्त होता है। मालिक के प्यारे का जीवन अंदर से शान्त होता है, वह मालिक से जुड़ा होता हैं; उसमें विवेक बुद्धि होती है। सच्चाई तो यह है कि ऐसी महान आत्माएं ही अपने गुरु का बोझ हल्का कर सकती हैं बाद में वही अपने गुरु का मिशन चलाते हैं।

मैं अक्सर यह बताया करता हूँ कि सन्तों का दर्शन भाग्य से मिलता है। ऊँचे भाग्य से ही शिष्य को गुरु मिलता है उसी तरह गुरु को अच्छा शिष्य बड़े ऊँचे भाग्य से मिलता है कई तैयारी में ही जिंदगी लगा जाते हैं। आप किसी भी महात्मा का जीवन पढ़कर देखें! बेशक उन्हें गुरु काफी समय के बाद मिला लेकिन उनकी खोज बचपन से ही जारी रहती है। बचपन से आँखें बंद करके बैठना उनका लक्ष्य होता है। महात्मा बचपन से ही अपने शरीर की बड़ी अच्छी तरह संभाल करते हैं अपने शरीर को दुनियां के विषय-विकारों में नहीं फँसाते। वे जानते हैं कि इस शरीर में उस मालिक ने बैठना है, वे बचपन से ही प्रभु की तलाश में होते हैं।

आप दसों गुरुओं का इतिहास पढ़कर देखें! उन्होंने कितनी मुसीबतें झेली, कितनी-कितनी देर गुरु की खोज की आखिर गुरु से मिलकर भी उन्होंने बड़ी सख्त मेहनत की। गुरु नानकदेव जी अच्छे खानदान में पैदा हुए थे। बचपन से ही आपमें लगन थी। आपने ग्यारह साल तक कंकड़-पत्थरों का बिछौना किया।

हमें महाराज सावन सिंह जी का जीवन पढ़ने को मिलता है। आप अच्छे खानदान में पैदा हुए, आपको अच्छी नौकरी मिली।

आपने नौकरी के साथ-साथ दुनियां का कारोबार भी किया। आपके अंदर परमात्मा की खोज थी। आपने बाईस साल खोज़ की, आप साधु-सन्तों की तलाश भी करते रहे। आपको जब बाबा जयमल सिंह जी मिले तो ऐसा नहीं कि रास्ता मिलने के बाद आप बैठ गए। आपने बहुत सख्त मेहनत की आप कई-कई दिन अंदर से बाहर नहीं निकलते थे और पूरा खाना भी नहीं खाते थे। जब नींद सताती तो आप वैरागन पर खड़े होकर अभ्यास करते थे। एक दिन आपके ड्राईवर बंतासिंह ने कहा, ''महाराज जी! मैं आपका खाना तैयार करता रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि आप सारी-सारी रात अभ्यास में बैठते और खाना भी नहीं खाते थे, क्या यह कमाई नहीं थी?'' आप यही कहते, ''यह सब बाबाजी की दया है मैंने कुछ नहीं किया।''

इसी तरह महाराज कृपाल को भी बचपन से ही रिद्धियाँ-सिद्धियाँ हासिल थी लेकिन आप इनसे काम नहीं लेते थे। आप रिद्धियों-सिद्धियों से यही कहते कि तुम मुझसे दूर रहो।

एक बार आपके चाचा बीमार थे। आप उन्हें देखने अस्पताल जाया करते थे। आप जितना सामान अपने चाचा के लिए लेकर जाते उतना सामान उनके साथ वाले बिस्तर के मरीज के लिए लेकर जाते। हम दुनियादार लोग तंगदिल होते हैं। आपके चाचा ने कहा, ''कृपाल! मैं तेरा चाचा लगता हूँ तेरे ऊपर मेरा हक है पर इसका क्या हक है तू इसके लिए क्यों सामान लाता है?'' महाराज जी ने कहा, ''चाचा जी! इसका भी मेरे ऊपर उतना ही हक़ है।''

जिस समय आप लाहौर मिलट्री में डिप्टी एकाऊंट ऑफिसर थे उन दिनों में आप रात के समय लाहौर रेलवे स्टेशन पर जाकर जो बुजुर्ग अपना सामान नहीं उठा सकते थे उनका सामान उठाते। इस तरह आप अपने जीवन में बहुत मुशक्कत करते रहे।

आप कहा करते थे कि मुझे दरिया पर सैर करने की बहुत आदत थी। एक बार आपने सोचा कि ब्यास दरिया की सैर भी करनी चाहिए। आपने ब्यास स्टेशन पर पहुँचकर स्टेशन मास्टर से पूछा कि ब्यास दरिया को कौन सा रास्ता जाता है? स्टेशन मास्टर ने महाराज जी से पूछा, ''क्या आपने डेरे जाना है?'' महाराज जी ने पूछा, ''क्या यहाँ कोई डेरा भी है?'' स्टेशन मास्टर ने कहा, ''हाँ! उस डेरे में सन्त रहते हैं।'' आपने सोचा एक पंथ दो काज, सैर भी हो जाएगी और सन्तों के दर्शन भी हो जाएंगे। जब आप डेरे पहुँचे तो आपने देखा कि यह वही महात्मा है जो सात साल से मुझे अन्दर दर्शन दे रहे हैं। आपने महाराज सावन से पूछा, '' बाहर के मिलाप में इतनी देर क्यों?'' महाराज सावन ने कहा, ''परमात्मा को यही समय मंजूर था।''

उसी समय महाराज कृपाल ने अपने भाई जोधसिंह को तार भेजी कि मुझे पूरा गुरु मिल गया है, दूसरी तार का इंतजार करे। ऐसी महान आत्मा सोच भी नहीं सकती कि हम गुरु का बोझ उठा लेंगे क्योंकि गुरु का बोझ उठाना बहुत मुश्किल होता है। कोई महान आत्मा ही गुरु का बोझ उठा सकती है।

जब गुरु अंगददेव को 'नामदान' का हुक्म मिला तो उन्होंने भी यही कहा की गठरी भारी है, मैं उठा नहीं सकता लेकिन गुरु का हुक्म टाला भी नहीं जा सकता। गुरु के आगे प्रार्थनाएं करते हैं कि आप बैठे रहें हम आपकी छत्र-छाया में रहें।

आप आम सतसंगों में सुनते हैं कि मैं अपनी माता को बहुत प्यारा था। मेरी माता मुझे अच्छे बिस्तर पर सुलाकर जाती लेकिन मैं कहीं न कहीं से बोरी ढूँढ़ लेता और रात को उस बोरी पर बैठ जाता। कभी-कभी मेरी माता रात को मुझे पकड़ लेती और मुझ पर

नाराज होती कि तू चारपाई पर क्यों नहीं लेटता? तू अभी छोटा है भजन तो बूढ़े करते हैं। मेरी विरासत में सुबह का सोना लिखा ही नहीं था, मैं सुबह के समय कभी नहीं सोया।

प्यारेयो! मैंने भूख-प्यास काटी और भक्ति इसलिए नहीं की थी कि मेरा गुरु मेरे जिम्में इतना बड़ा काम डाल देगा। मैंने तो भक्ति करके मालिक के आगे अपना आप इसलिए अर्पण किया था कि जब मालिक मिल जाए तो उसके चरणों में अपना प्यार लगाए रखें। मुझे यह मालूम नहीं था कि आप मुझे इतना बड़ा काम देकर जाएंगे जिसे उठाने के लिए दिल भी काँपता है। गुरु ने जिसे 'नाम' दिया होता है वह उसे ले जाता है गुरु उसका जिम्मेवार होता है क्योंकि गुरु दयालु है लेकिन यह काम ऐसी महान आत्मा के जिम्मे लगाया जाता है।

जब महाराज कृपाल ने मुझे गंगानगर में अपने साथ कार में बिठाया, उस समय मैं आपके साथ बैठना नहीं चाहता था। आप सारी रात प्रेमियों से मिलकर थके हुए थे। मैं चाहता था कि मैं अपनी जीप में बैठूँ लेकिन आपने मुझे गले से लगाकर कहा कि कोई खास काम है तू मेरे साथ ही बैठ। मेरे बैठते ही आपने अपने गुरुदेव के अंत समय की कहानी शुरु कर दी कि किस तरह आपके जिम्मे यह कारोबार डाला गया। जिस समय आप यह सब बता रहे थे उस समय मेरा दिल और शरीर काँप रहा था। आपने कहा कि कई कारण थे जो मैं महाराज सावन का हुक्म नहीं टाल सका लेकिन मेरी अर्ज थी कि आप इस तख्त पर बैठे हुए सुंदर लगते हैं।

बाबा सावन सिंह जी ने यही कहा, ''कृपाल सिंह! थ्योरी समझाने वाले तो जगह-जगह तैयार होंगे। गुरु बनने की लालसा सबको होगी लेकिन नाम एक तवज्जो होती है। मेरी तालीम गुम न

हो जाए।'' मैंने यह सब सुनकर महाराज जी से कहा कि आप ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं आज आपके ख्याल कैसे हो रहे हैं? आपने कहा, ''हाँ ! भविष्य में ये सारी बातें तेरे काम आएगी। मैं तुझे ही यह सब बताना चाहता था।''

प्यारेयो! सतसंगी के लिए सतगुरु दया का पुंज होता है। गुरु हम शराबी-कबाबी, विषय-विकारों में सड़ते हुओ को नाम देता है। गुरु शब्द-रूप होकर हमारे अंदर बैठकर हमारी संभाल करता है। गुरु को अपने बिरद की लाज होती है। काल अपने एजेन्ट मन को हमारे पीछे लगाए रखता है। काल कभी हमारे अंदर मान-बड़ाई का ख्याल पैदा करता है कभी किसी कारोबार में फँसाए रखता है और सन्तों के पास जाने में भी रुकावटें डालता है। हम मंदिर-मस्जिदों में रोज़ यही चर्चा सुनते हैं कि नाम के बिना मुक्ति नहीं। नाम लेते समय भी काल हमारे अंदर खलबली पैदा कर देता है।

काल हमारे अंदर बाँई तरफ बैठा है और शब्द-रूप गुरु दाँई तरफ बैठा है। जब सतसंगी बुराई करता है तो काल उसी समय गुरु को कहता है कि देख! तूने इसे नाम दिया है, इसकी करतूत कैसी है, क्या यह नाम के काबिल है? आप सोचकर देखे! जो माता-पिता अपनी ड्यूटी समझते हैं अगर कोई उनके बच्चे की उनके सामने बुराई करे तो उन्हें बुरा लगता है। कर्म तो सतसंगी करते हैं लेकिन उसकी नामोशी गुरु को उठानी पड़ती है। गुरु तो प्यार, श्रद्धा और भरोसे वाला होता है वह यही कहता है कि यह जरूर सुधरेगा, मैं इसे सुधार लूँगा।

कई प्रेमी ऐसा कहते हैं कि हम फैसला नहीं कर सकते कि यह ख्याल गुरु की तरफ से है या मन की तरफ से हैं? उन्हें यह सोच लेना चाहिए कि जो ख्याल बुराई कि तरफ प्रेरित करेगा वह

ख्याल काल की तरफ से होगा। जब नेक ख्याल उठते हैं वे गुरु की तरफ से होते हैं। जब हमारे अंदर नेक ख्याल उठते हैं उस समय हमें भजन में बैठ जाना चाहिए, हमें उस मौके का फायदा उठाना चाहिए क्योंकि उस समय आत्मा का झुकाव प्रभु की तरफ होता है।

यह भी गुरु के साथ सहयोग ही होता है कि हम गुरु पर दुनियावी मसलें न डाले। जब सतसंगी को नामदान मिल जाता है तो गुरु काल से पिछला हिसाब-किताब अपने हाथ में ले लेता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पिछले औगुण बख्श दे, प्रभु आगे मार्ग पावे।

प्यारेयो! कर्म चाहे सतसंगी भोगे चाहे गुरु भोगे काल माफ नहीं करता। यह काल की मौज होती है वह सन्तों की आँख ले, चाहे उनकी टाँग ले चाहे उन्हें बुखार चढ़ाए। काल जो भी कष्ट देता है सन्त उसे खुशी-खुशी अंगीकार कर लेते हैं।

महाराज कृपाल ने हमें डायरी रखने का हुक्म दिया। डायरी हमारी बीमारी की दवा है। जब सतसंगी नाम ले लेता है तो उसे आगे बुरे कर्म नहीं बढ़ाने चाहिए, गुरु के ऊपर बोझ नहीं डालना चाहिए। हमें भजन-सिमरन करना चाहिए अपने आपको सुधारना चाहिए और डायरी के मुताबिक अपना जीवन बनाना चाहिए।

सन्त हर तरह के कर्म से बरी होते हैं। जो भी सन्त देह में आते हैं उन्हें कितना भुगतान करना पड़ता है। पराई आग में केवल गुरु ही सड़ता है; कौन पराए कर्म उठाता है? एक बार महाराज सावन सिंह जी एक प्रेमी के कर्म उठाकर इतने बीमार हो गए कि उन्हें कोई होश न रही। नीचे का साँस नीचे और ऊपर का साँस ऊपर रह गया। आपने जिस प्रेमी का कर्म उठाया हुआ था वही

प्रेमी अभाव लेकर बैठा था। उस प्रेमी ने कहा, ''महाराज जी! क्या यह आपका अपना कर्म है या किसी और का?'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''यह मेरे किसी प्यारे का कर्म है।''

ऐसा ही मौका बाबा जयमल सिंह जी के समय में हुआ। बाबा जयमल सिंह का एक सतसंगी मोती राम अम्बाला में दर्जी का काम करता था। मोतीराम ने बाबा जयमल सिंह जी से अम्बाला में एक महीना सतसंग देने की प्रार्थना की। उस समय संगत कम हुआ करती थी। बाबा जयमल सिंह जी सतसंग देने के लिए अम्बाला चले गए। अम्बाला में एक ऊँचे औहदे वाला सरदार हुक्म सिंह सतसंग में आने लगा। सतसंग देते हुए अभी दो दिन ही हुए थे कि मोती राम के दिल में ख्याल आया अगर हुक्मसिंह 'नाम' ले ले तो सतसंग की अच्छी शोभा बन जाएगी। इसकी वजह से और लोग भी नाम ले लेंगे।

हम सतसंगियों में यह खासियत होती है कि और भी लोग सतसंगी बन जाए जिस तरह हमारा फायदा हुआ है इन लोगों का भी फायदा हो जाए। मोती राम ने सरदार हुक्मसिंह को बाबाजी के आगे पेश किया कि आप इसे 'नाम' दें। बाबा जयमलसिंह ने कहा, ''चाहे आप दो सौ आदमियों को नाम दिलवा लें लेकिन इसे नाम न दिलवाएं।'' मोतीराम ने कहा कि आप इसे जरूर नाम दें। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''मैं एक शर्त पर इसे नाम दे सकता हूँ कि आप टाँगा मंगवाकर मेरा बिस्तर उसमें रख दें मैं इसे नाम देकर डेरे चला जाऊँगा।'' मोतीराम ने जिद्द नहीं छोड़ी। बाबा जी उसे नाम देकर वापिस डेरे चले गए।

महाराज सावन सिंह जी लुधियाना स्टेशन पर बाबा जयमलसिंह से मिले। महाराज सावन सिंह जी को जब भी छुट्टी मिलती थी आप

डेरे चले जाते थे। महाराज सावन ने कहा कि मैं इस हफ्ते डेरे आना चाहता हूँ। बाबा जयमल सिंह ने कहा कि इस हफ्ते नहीं एक और हफ्ता छोड़कर डेरे आना।

कुछ दिनों बाद महाराज सावन सिंह जी डेरे पहुँचे तो बाबा जयमल सिंह जी की शक्ल पीली हुई पड़ी थी। आपको पंद्रह दिन इतना बुखार चढ़ा कि जिसका कोई हिसाब नहीं था। आपने कोई दवाई भी नहीं ली। आप बहुत कमजोर हो गए थे। महाराज सावन ने कहा कि आपने मुझे डेरे क्यों नहीं आने दिया। मैं आपके दुख में सहाई होता आपकी सेवा करता।

बाबा जयमल सिंह ने कहा कि तूने अभाव ले आना था कि सन्तों की यह हालत? तुझसे यह सहन नहीं होना था। नाम देना आसान नहीं होता, दूसरे के कर्म उठाने पड़ते हैं। सतसंगी को चाहिए की 'नाम' मिलने के बाद बुरी तरफ कदम न बढ़ाए। रोजाना अभ्यास करके हम गुरु के मिशन में मदद कर रहे होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह से पूछा कि यह किसका कर्म था? बाबा जयमल सिंह जी ने कहा कि तुझसे हजम नहीं होगा। मैंने आपसे वायदा किया था कि जब तक आप देह में हैं मैं इसका जिक्र नहीं करुंगा। आज बाबा जयमल सिंह जी शारीरिक रूप से संसार में नहीं हैं इसलिए मैं बता रहा हूँ। प्यारेयो! सन्त किसी को यह महसूस भी नहीं होने देते कि उन्होंने किसका कर्म उठाया है। वह अपने में से धुँआ तक भी नहीं निकलने देते और बड़े सब्र से अपने गुरु के आगे पेश होते हैं।

आप जानते हैं कि ऐसी कहानियों से ग्रंथ भरे पड़े हैं कि सन्तों ने संसार में आकर किस तरह जीवों का फायदा किया।

एक प्रेमी: *प्यारे महाराज जी! मैंने आपका वह लेख पढ़ा है जोकि आपने पढ़ने के लिए कहा था। उस लेख को पढ़ने के बाद मुझे बहुत अफसोस हुआ। मैं जब यहाँ से अपने घर वापिस जाऊँगा तो मुझ पर हमला करने वाले डाकू-काम, क्रोध मुझ पर हमला करें उस समय मैं आपके बारे में मधुरता से सोचकर काम और क्रोध को एक तरफ करने की कोशिश करूँ तो क्या ऐसा नहीं होगा कि मैंने अपने प्यार की रस्सी आपके गले में डालकर आपके ऊपर अपना बोझ लाद दिया है?*

बाबाजी: मुझे खुशी है कि आप लोगों ने सवाल-जवाब के उस लेख पर अच्छी तरह विचार किया है। मैं सदा ही सन्तबानी मैगजीन पढ़ने की सलाह देता हूँ कि मैगजीन में प्रेमियों के सवाल-जवाब छपते हैं जोकि हरेक के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। हम सतसंगियों को इन पाँच डाकूओं के बारे में मन को अच्छी तरह बता देना चाहिए कि काम बेईज्जती का कारण बनता है, इन्सान को जानवर बना देता है; कामी को पास खड़ा हुआ इंसान भी नजर नहीं आता और काम हमें नरकों में ले जाता है। हमें अपने मन को काम के नुकसान बताते रहना चाहिए।

कामी आदमी 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं कर सकता, बेशक वह कितना भी समय अभ्यास में क्यों न लगा ले उसे 'शब्द' का रस ही नहीं आता। काम ऐसी अग्नि है इसके ऊपर जितनी ज्यादा लकड़ियाँ डालें यह उतना ही भांबड़ मचाती हैं। हमें अपने मन के साथ संघर्ष करना चाहिए। सतगुरु ने हमें शब्द-धुन के साथ लैस किया होता है। हमें पाँच पवित्र नामों को नहीं भूलना चाहिए।

जब मन हमारे अंदर बुरे ख्याल पैदा करे तो उसकी तरफ तवज्जो न दें, सिमरन करे आपको अवश्य मदद मिलेगी।

जब सिपाही फ्रंट पर जाता है तो कई बार दुश्मन का जोर पड़ जाता है अगर सिपाही दुश्मन के आगे हथियार फैंक दे तो वह कैसे कामयाब होगा? अगर सिपाही कायर बनकर भागता है तो वह अपने मालिक का नमक हलाल नहीं करता इसी तरह सतसंगी को भी चाहिए कि वह एक सिपाही की तरह अपने मन के आगे मजबूत बनकर खड़ा हो जाए और उसके आगे हार न माने। मन के हमले से पहले ही हमें मन पर सिमरन का धावा बोल देना चाहिए।

जब काम हमारे ऊपर हमला करता है या हमारे ख्यालों में आ जाता है तो हम उन ख्यालों को अपने अंदर जगह दे देते हैं तो मन हमारे ऊपर हमला करता है फिर हम अपने शरीर के साथ काम की भूख मिटाते हैं। हम काम में फँसकर रुहानियत में दिवालीए हो जाते हैं तो हम तरक्की नहीं कर सकते। काम हमें ऐसे गहरे खड्डे में फैंक देता है जहाँ से हम निकल नहीं सकते। काम की बदबू दिमाग में ऐसी चढ़ती है जो सारी जिन्दगी इंसान के दिमाग से नहीं निकलती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं :

हे कामी नर्क बिसरामी बोह जूनी भरमावनेया।

आप कहते हैं, ''हे काम! तू हमें ऊँची-नीची योनियों में ले जाता है, तू हमारे जप-तप को छीन लेता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज हमें खबरदार करते हुए कहते हैं:

निमख स्वाद कारन कोटि दिनस दुख पावे।
घड़ी मोहित रंग माणें रलिया बोहर-बोहर पछतावे।

हमें मन को समझाना चाहिए कि थोड़े से सुख के लिए तुझे करोड़ दिन दुख सहने पड़ेंगे। करोड़ दिन के तैंतीस हजार साल बनते हैं अगर मन को यह घाटा बता दें तो मन तौबा कर जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने अपने गुरु के आगे अपनी बाँहें फैलाकर पुकार की कि मुझे बचा ले, ये दुश्मन मुझे घेरते हैं तो मुझे मेरे गुरु ने बचा लिया।'' अगर इसी तरह हम भी सच्चे दिल से अपने गुरु के आगे फरियाद करते हैं तो चाहे रास्ता कितना भी बिखड़ा क्यों न हो गुरु हमारी मदद के लिए पहुँचता है।

हम अपने अंदर ख्यालों को जगह देकर बैठे होते हैं और ऊपर से सिमरन का ढोंग रचाते हैं। अगर हम अंदर-बाहर से सच्चे हैं तो हमारी पुकार जरूर सुनी जाएगी।

हम गुरु के ऊपर दुनियावी झगड़ों का बोझ डालते हैं। हम गुरु को पत्र लिखते हैं या इंटरव्यू में उनसे दुनियावी बातें करते हैं। सन्तों का हमारी दुनियावी जिन्दगी से कोई लेखा-जोखा नहीं होता। गुरु तो हमें सतसंग में भी यही समझाते हैं कि आप अपनी जिन्दगी के कारज शान्त मन और विवेक बुद्धि से करेंगे तो अपनी जिन्दगी शान्ति से बिता सकेंगे और ज्यादा से ज्यादा सिमरन भी कर सकेंगे। जो इन डाकुओं से बचने के लिए फरियाद करते हैं वे ऊँचे भाग्यवाले हैं। सन्त तो चाहते हैं कि हमारे बच्चे इनसे बचें।

गुरु एक धोबी की तरह है, वह तो मैले से मैले जीव की मदद करने के लिए तैयार रहता है। पति-पत्नी के लिए अपनी जिन्दगी को स्वर्ग बनाना, प्यार भरी बनाना यह उनकी खुद की ड्यूटी होती है। पत्नी पत्र में पति के सारे नुख्स लिख देती है इसी तरह पति पत्र में अपनी पत्नी के सारे नुख्स लिख देता है। आप सोचकर देखें! जब सन्त ऐसे पत्र पढ़ते हैं तो उनके दिल पर क्या बीतती है?

यह परेशानियाँ तो मियाँ-बीवी के बीच की होती है; उन्हें आपस में बैठकर ही फैसला करना चाहिए। सन्त किसी को यह

नहीं कहते कि आप अलग-अलग हो जाएं। हम सन्तों से ऐसी बेहूदी बातें करते हैं जिनका रूहानियत से कोई मतलब नहीं होता।

जो जीव काम, क्रोध से बचने के लिए गुरु के आगे फरियाद करता है तो ऐसे जीव की मदद करके गुरु को खुशी होती है। गुरु हमें इन पाँच डाकुओं से मुकाबला करवाने के लिए संसार में आते हैं। जब कोई सच्चे दिल से इनसे बचने के लिए फरियाद करता है तो गुरु जरूर मदद करता हे। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

सवा लाख से एक लड़ाऊ तभी गोबिंद सिंह नाम कहाऊ।

हमारे धर्म ग्रन्थों में आता है कि एक इन्द्री की ताकत दस हजार हाथी की ताकत के बराबर है। इन्द्रियों को रोकना खाला जी का बाड़ा नहीं। अकेले मन की ताकत पच्चीस हजार हाथी के बराबर लिखी हुई है। इंसान के लिए तो एक हाथी को रोकना भी मुश्किल है। गुरु इस संसार से हमें इनसे मुकाबला करवाने के लिए ही आते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी कहते हैंः

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊ तभी गोबिन्द सिंह नाम कहाऊ ।

आत्मा चिड़िया है और मन बाज है। मैं इस मन को आत्मा के बस में कर दूँगा तो ही गुरु कहलाऊँगा।

जब मेरे गुरु कुलमालिक महाराज कृपाल मुझे अंदर बिठाने लगे, उन्होंने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''देख! आँखें अंदर खोलनी है और बाहर से बंद रखनी है।'' उस समय मैं एक यतीम की तरह रोया बाहर से भी आँखों से पानी निकला लेकिन बाहर की आँखों का पानी अंदर के पानी से बहुत कीमती था। मैंने कहा, ''आपने मेरी लाज रखनी है। यहाँ काल का राज्य है, काल मेरे पीछे लगा हुआ है और मेरी लाज आपके हाथ में है।''

यह आपकी दया थी कि मैं मजबूत रहा। मुझे बचपन से ही आपकी दया मिलती रही है। जिसे बचाना होता है उसके ख्यालों में बचपन से ही प्रभु का प्यार जाग पड़ता है और प्रभु उसे बुराई से बचाकर रखता है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आपने मेरी जिंदगी की नींव मजबूत बनाई। उस समय मेरी जवान अवस्था थी। आपने कहा, ''देख बेटा ! अगर तू कोई बुराई करेगा शराब पीएगा या भोगों में फंसेगा तो लोग मुझे बुरा कहेंगे कि यह उसका चेला है, यह मुझसे सुना नहीं जाएगा हो सकता है उस समय मैं आत्मघात कर लूँ! अब तू सोच समझकर अपना जीवन

बिताना। जिस तरह सेवक की लाज गुरु के हाथ में होती है उसी तरह गुरु की लाज भी सेवक के हाथ में होती है।''

बाबा बिशनदास जी ने मेरे अलावा किसी को 'नाम' नहीं दिया था। आप बहुत सख्त सन्त थे। मैं बहुत ऊँची-नीची जगह पर गया लेकिन मैंने उनका वचन पल्ले बाँधकर रखा। मैं जब घर से मालिक की खोज में निकला था उस समय मेरी माता ने कहा, ''देख बेटा! किसी का दिया हुआ कपड़ा नहीं पहनना। किसी से माँगकर नहीं खाना इससे हमारी बेइज्जती होगी। जब तेरे पास पैसे खत्म हो जाएं तू घर से आकर और पैसे ले जाना हम तुझे रोकेंगे नहीं। हम तेरे प्यार और लगन को समझते हैं।''

अगर आज भी मुझे कोई मजबूर करता है तो मैं उसे अपनी माता का वचन दोहराता हूँ। मेरी माता ने यह भी कहा था कि अगर कोई मजबूर करे तो उसका अफजाना किसी भी बहाने दे देना, उसका दिल भी नहीं तोड़ना इसी तरह मैंने बाबा बिशनदास जी के वचन को भी निभाया। कबीर साहब ने कहा थाः

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

प्यारेयो! शिष्य को देखकर ही गुरु का पता लगता है। गुरु के शिष्य जितने अच्छे होते हैं उतना ही गुरु का ज्यादा मान होता है। गुरु जितने ज्यादा शिष्यों को मालिक की दरगाह में लेकर जाएगा वह अपने आपको उतना ही भाग्यशाली समझेगा।

बाबा बिशनदास ने मुझसे यह कहा था कि सदा खेती करके ही अपना निर्वाह करना है आलसी नहीं बनना। जब मैंने पंजाब छोड़ा तो राजस्थान में जमीन खरीद ली। उस समय इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ मैंने सदा ही अपने हाथों से किरत की,

मैं अपने आपको जितना काबिल समझता था उतनी मैंने हमेशा कोशिश की। मैंने खेती-बाड़ी करने में कभी शर्म महसूस नहीं की।

हमें अपने मन को क्रोध के नुकसान बताने चाहिए। क्रोध एक बहुत बुरी आग है जिसके अंदर यह आग लग जाती है उसके अच्छे गुणों को भस्म कर देती है। लोभ इंसान को एक माँस के लोथड़े की तरह बना देता है। लोभी इंसान को न बेटे से प्यार होता है और न ही बेटी से प्यार होता है। वह अपनी ही तृष्णा पूरी करने में लगा रहता है। लोभी आदमी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता।

यही हालत मोह की है, मोह ही हमें बार-बार संसार में खींचकर लाता है। मोह हमारा जानी दुश्मन है। ऐसी ही हालत अहंकार की है, अहंकार की उम्र बहुत लम्बी होती है। यह सब इन्द्रियों के बाद ही हार मानता है, सन्तों ने इससे बचने की दवाई 'शब्द-नाम' की कमाई बताई है। शब्द नाम की कमाई करने से ही हमारी आत्मा अहंकार का मुकाबला कर सकती है। हमारी आत्मा एक चिड़ियां की तरह कमजोर होती है लेकिन नाम की कमाई करने से आत्मा बाज जैसी ताकतवर हो जाती है।

महाराज सावन दुनियादारो की दुर्दशा देखकर बताया करते थे कि हम जहर भी खाते रहते हैं और हाय-हाय भी करते रहते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि जब इंसान हाथ में दीपक लेकर कुँए में गिरता है तो उसे कौन बचा सकता है? इसलिए हमें ईमानदारी के साथ गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए अगर हम ईमानदारी से भजन-सिमरन करते हैं तो गुरु अपनी ड्यूटी जरूर करता है। गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से पीछे नहीं रहता।

***